दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय
गोरखपुर-273001

(नैक प्रत्यायित 'B' श्रेणी)

सम्बद्ध

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

☎ & Fax : 0551-2334549
: 09792987700
e-mail : digvijayans@gmail.com
: dnpggkp@gmail.com
website : www.dnpgcollege.edu.in

पत्रांक : /2018–19 दिनांक : 20.09.2018

समाचार स्वरूप प्रकाशनार्थ

आज दिनांक 20 सितम्बर 2018 को दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय में युगद्रष्टा महन्त दिग्विजयनाथ स्मृति व्याख्यानमाला के छठवें दिन अर्थशास्त्र विभाग द्वारा प्रायोजित 'जैविक खेती आज की आवश्यकता' विषय पर मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए डॉ. आर.पी. सिंह, कृषि वैज्ञानिक एवं विभागाध्यक्ष, कृषि विज्ञान केन्द्र, पीपीगंज, गोरखपुर ने कहा आदिकाल से भारत कृषि प्रधान देश रहा है और कृषि ही हमारे राष्ट्र की सकल आय का प्रमुख स्रोत रही है। किन्तु वर्तमान परिवेश में प्रदूषण ने भूमि की उर्वरता को अत्यधिक प्रभावित किया है। 60के दशक की हरित क्रांति ने देश को खाद्यान्न की दिशा में आत्मनिर्भर बनाया। लेकिन अंधाधुंध उर्वरकों के प्रयोग तथा जलस्तर में गिरावट से सोना उगलने वाली धरती को मरूस्थल में बदल रहा है। जिसके लिए वर्तमान संदर्भ में रासायनिक उर्वरकों के इस्तेमाल में सावधानी बरतते हुए जैविक खेती पर ध्यान देना आज की आवश्यकता बन गयी है, जो आज वरदान साबित हो सकती है। जिसका सीधा सम्बन्ध जैविक खाद से है। आज 60 प्रतिशत से अधिक लोग अपनी आजीविका कृषि से चला रहे हैं, फिर भी हमारी खेती संकटग्रस्त है। इसके अतिरिक्त हमारे देश के खेतों का आकार भी बहुत छोटा है, जिसके लिए आवश्यकता इस बता की है कि एक किसान अपने संसाधन सस्ते खर्चो में आसानी से जुटाएँ। इस कृषि के लिए गोबर की खाद, केचुएँ की खाद, जलकुम्भी, गाजर घास, चेच तथा भूसे आदि से बनायी गयी खाद, जैसे तत्व बिना मिट्टी को क्षति पहुचाएँ कम लागत पर अधिक से अधिक उत्पादन कर सकते हैं। इससे कृषि करने पर जहॉ मिट्टी की संरचना सुधरती है, वही फसल का विकास का उत्पादन भी अच्छा होता है। जैविक खेती से पर्यावरण सुधरता है और मित्र कीटों के कारण उत्पादन बढ़ता है तथा

पौधो की जड़ो तक हवा और पानी भली–भांति मिलता है, जिससे पौधे स्वस्थ होते हैं।

आगे उन्होने कहा कि भूमि की उर्वरता एवं कृषि उत्पादन बढ़ाने के लिए फसल चक्र अपनाना अति आवश्यक है। क्योंकि इससे मनुष्य के साथ–साथ पशुओं को भी लाभ मिलता है। इन्होने मिश्रित खेती की आवश्यकता पर बल दिया और कहा कि अरहर, ज्वार, बाजरा एक साथ बोये जाने से किसान और पशु दोनों को लाभ मिलता है। इन्होने दलहनी फसलों के लिए रासायनिक खाद को अत्यधिक हानिकारक बताया। रासायनिक खाद के मुकाबले जैविक खाद, अधिक सस्ते और टीकाउ होते हैं जो भूमि की भौतिक दशा को सुधार देते हैं तथा पौधो के लिए आवश्यक तत्व नाइट्रोजन, फास्फोरस और पोटाश आदि इन खादों के प्रयोग से ही प्राप्त हो जाते हैं। जैविक खाद सड़ने पर काबर्निक अम्ल पैदा होती है, जो भूमि के अघुलनशील तत्वों को घुलनशील अवस्था में बदल देती हैं। अन्त में उन्होने यह भी कहा कि प्रदेश सरकार ने कृषि की गुणवत्ता बढाने तथा कम लागत पर अधिक से अधिक उत्पादन करने के लिए प्रदेश में छः कृषि वैज्ञानिक केन्द्रो की स्थापना की है, जो निरन्तर कृषि के स्तर को बढ़ाने के लिए सतत प्रत्यनशील है । यदि किसान ऐसा करने में सफल रहा तो उससे न केवल कृषि के उत्पादन में वृद्धि होगी बल्कि आस–पास का वातावरण एवं पर्यावरण भी शुद्ध होगा तथा मनुष्य के साथ साथ पशुओं की भी सुरक्षा भलि भांति होगी।

कार्यक्रम का संचालन अर्थशास्त्र के प्रभारी डॉ. सत्यपाल सिंह तथा आभार ज्ञापन महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. शैलेन्द्र प्रताप सिंह ने किया। अतिथि का स्वागत व्याख्यानमाला की संयोजिका डॉ. अर्चना सिंह ने किया।

समापन– दिनांक – 21.09.2018, समय – अपराह्न 01.30 बजे।
मुख्य अतिथि - प्रो. के.एन. सिंह, कुलपति, उ.प्र. राजर्षि टण्डन मुक्त वि.वि., इलाहाबाद
कार्यक्रम स्थल – संवाद कक्ष (दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गोरखपुर)।

डॉ.(मुरली मनोहर तिवारी)
सूचना एवं जनसम्पर्क प्रभारी
मोबाइल नं–9452879449

व्याख्यान-माला

व्याख्यान-माला